कर मार डाला। अब सिराजुद्दौला की आंतरिक स्थिति मजबूत हो गई। उसने आवश्यक प्रशासनिक परिवर्तन भी किये और अंग्रेजों की तरफ अपना पूरा ध्यान दिया। अंग्रेज भी इस समय तक अपनी स्थिति मजबूत कर चुके थे। दक्षिण में फ्रांसीसियों पर विजय होने से और बंगाल में धन कमाने से उनके हौसले बढ़ चुके थे। इसके साथ ही बंगाल की राजनैतिक स्थिति को देखते हुए भी वे अपना हितसाधन चाहते थे। दूसरी तरफ, नवाब भी अंग्रेजों की तरफ से संशंकित था। इन परिस्थितियों के बीच अंग्रेजों ने सिराजुद्दौला के नवाब बनने पर उसे नजराना नहीं भेजा। इससे सिराजुद्दौला को अपमानित महसूस हुआ। इसके अतिरिक्त अंग्रेज नवाब की आज्ञा की अवहेलना भी करते रहे। वे नवाब के अधिकारियों की मदद से सारा काम करा लेते तथा नवाब से किसी प्रकार का संबंध नहीं रखना चाहते थे। उन्होंने एक बार नवाब को कासिमबाजार की कोठी में भी आने से रोक दिया था। किसी भी शासक के लिये यह एक असह्य स्थिति थी। इसके अतिरिक्त नवाब के रोकने के बावजूद अंग्रेज कलकत्ता एवं अन्य जगहों की किलेबंदी करते चले जा रहे थे। दस्तक के दुरुपयोग से नवाब को आर्थिक क्षति भी हो रही थी। अंग्रेज नवाब के विरोधियों एवं विद्रोहियों को शरण तथा संरक्षण प्रदान कर रहे थे। ऐसी परिस्थितियों में अंग्रेजों और नवाब के बीच संघर्ष अनिवार्य हो गया। वस्तुतः सिराजुद्दौला यूरोपीय व्यापारियों को बंगाल में व्यापारी के रूप में देखने को तैयार था लेकिन मालिक के रूप में बिल्कुल नहीं। फ्रांसीसियों ने उसकी आज्ञा मानकर चंद्रनगर की किलेबंदी नष्ट कर दी थी। परन्तु अंग्रेजों की महत्वाकांक्षायें कर्नाटक के युद्धों के पश्चात् बढ़ी हुई थी। अंग्रेज सिराजुद्दौला की सार्वभौमिकता को स्वीकार करने को तैयार नहीं थे। ऐसी स्थिति में संघर्ष की शुरुआत होनी भी तो ही थी।

सिराजुद्दौला ने फोर्ट विलियम की किलेबंदी को नष्ट करने का आदेश दिया, जिसे अंग्रेजों ने ठुकरा दिया। क्रोधित होकर नवाब ने मई, 1756 में कासिमबाजार पर आक्रमण कर उसपर अधिकार कर लिया। उसके बाद उसने कलकत्ता पर आक्रमण किया। 20 जून, 1756 को नवाब का फोर्ट विलियम पर अधिकार हो गया। अधिकार होने के पूर्व ही अंग्रेज गवर्नर ड्रेक स्त्रियों, बच्चों और अन्य लोगों के साथ भागकर फुल्टा द्वीप में शरण लेने को बाध्य हुआ। इधर कलकत्ता में बची-खुची अंग्रेजों की सेना ने भूतपूर्व सर्जन हॉलवेल के नेतृत्व में किले को बचाने का प्रयास किया, लेकिन इसे आत्मसमर्पण करना पड़ा। नवाब की यह बहुत बड़ी विजय थी। अनेक अंग्रेजों को बंदी बनाकर और माणिकचंद के जिम्मे कलकत्ता का भार सौंपकर नवाब अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद लौट आया। ऐसी ही परिस्थितियों के बीच 'काली कोठरी' की दुर्घटना (The Black Hall

प्लासी का युद्ध (1757ई०)

डॉ० संदीप कुमार
इतिहास विभाग
बी० एम० कॉलेज, टिस्को

प्लासी का युद्ध बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला और ईस्ट इंडिया कम्पनी के संघर्ष का परिणाम था। इस युद्ध के अत्यंत महत्वपूर्ण तथा स्थायी परिणाम निकले। इस युद्ध ने भारत में अँग्रेजी सत्ता की स्थापना कर दी।

प्लासी युद्ध के कारण :— बंगाल की तत्कालीन स्थिति एवं अँग्रेजी स्वार्थ ने ईस्ट इंडिया कम्पनी को बंगाल की राजनीति में हस्तक्षेप करने का मौका प्रदान किया। औरंगजेब की मृत्यु से उत्पन्न राजनीतिक अव्यवस्था का लाभ उठाकर अलीवर्दी खाँ, जो पहले बिहार का नायब-निजाम था, ने अपनी शक्ति अत्यधिक बढ़ा ली थी। उसने 1740 ई० तक पर्याप्त शक्ति एवं प्रतिष्ठा हासिल कर ली। वह एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति था। उसने बंगाल के तत्कालीन नवाब सरफराज खाँ से विद्रोह कर उसे युद्ध में पराजित कर मार डाला और स्वयं ही नवाब बन बैठा। अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के लिये उसने मुगल सम्राट मुहम्मदशाह को धन देकर अपनी नवाबी को कानूनी मान्यता भी दिलवाई। उसने कुशलतापूर्वक बंगाल के प्रशासन का संचालन किया। और अँग्रेजी और फ्रांसीसी कम्पनियों को बंगाल की राजनीति में हस्तक्षेप करने से रोके रखा। उसने यूरोपियों की मक्खियों से तुलना की थी, कि यदि उन्हें छेड़ा नजाय तो वे शहद देंगी और यदि छेड़ा जाए तो वे काट-काटकर मार डालेंगी। इसलिये वह इनकी गतिविधियों पर नियंत्रण रखे रहा।

9 अप्रैल, 1756 ई० को अलीवर्दी खाँ की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के साथ ही बंगाल में उत्तराधिकार के प्रश्न को लेकर षड्यंत्र होने प्रारम्भ हो गये। जिसके चलते अंततः अँग्रेजों को बंगाल की राजनीति में हस्तक्षेप करने का मौका मिल गया। चूँकि मृत नवाब अलीवर्दी खाँ का कोई पुत्र नहीं था, इसलिये उसने अपनी सबसे छोटी बेटी के पुत्र सिराजुद्दौला को अपने जीवनकाल में ही उत्तराधिकारी मनोनीत कर दिया था। अतः अलीवर्दी खाँ की मृत्यु के पश्चात सिराजुद्दौला बंगाल का नवाब बन गया। नवाब बनने के साथ ही उसे अनेकों विरोधियों का सामना करना पड़ा। नवाब के प्रबलतम प्रतिद्वंदी उसकी मौसी घसीटी बेगम, उसका पुत्र शौकतजंग जो पूर्णिया का शासक था तथा उसका दीवान राजवल्लभ था। इन लोगों ने अपने पक्ष में सेनापति मीरजाफर एवं कलकत्ता के धनी व्यापारी अमीनचंद एवं जगत सेठ को भी मिला रखा था। ये सिराजुद्दौला को गद्दी से हटाकर अपना मनचाहा व्यक्ति नियुक्त करना चाहते थे। अतः सिराजुद्दौला के लिये आवश्यक था कि वह पहले अपनी स्थिति सुदृढ़ कर ले। सबसे पहले उसने घसीटी बेगम को कैद कर उसका सारा धन जब्त कर लिया। प्रारम्भ में शौकतजंग ने सिराजुद्दौला से समझौता होकर उसके प्रति वफादार रहने का वचन दिया, परन्तु जब उसे मुगल बादशाह से बंगाल की नवाबी की सनद मिली तो सिराजुद्दौला ने उसे 16 अक्टूबर, 1756 ई० को मनीहारी के युद्ध में पराजित

Ananta Oxford

Tragedy) घटी, जिसने अँग्रेजों और बंगाल के नवाब के संबंध और भी कटु बना दिये। कहा जाता है कि नवाब के अधिकारियों ने फोर्ट विलियम पर अधिकार करने के पश्चात् 146 अँग्रेज कैदियों को जिनमें स्त्रियाँ और बच्चे भी थे, एक छोटे और अँधेरे कमरे में, जो 18 फ़ीट लम्बा और 14 फ़ीट चौड़ा था में बंद कर दिया। जून की असह्य गर्मी में और यातनाओं के चलते उनमें से अगली सुबह सिर्फ 23 व्यक्ति ही जिंदा बचे। बचनेवालों में हॉलवेल भी था जिसने इस घटना को प्रचारित किया। इस घटना की सत्यता अत्यंत विवादास्पद है। डॉ० सरकार और दत्त के अनुसार, इस घटना का उल्लेख समकालीन अँग्रेजी, डच, फ्रांसीसी और आर्मीनियन रेकॉर्डों में मिलता है हालांकि इनके विवरण एक-दूसरे से भिन्न हैं। जब इस घटना की खबर मद्रास पहुँची तो अँग्रेज क्षुब्ध हो उठे शीघ्र ही मद्रास से क्लाईव एवं वाटसन थल एवं जल सेना लेकर कलकत्ता की तरफ बढ़े। इन दोनों ने नवाब के अधिकारियों को रिश्वत देकर अपने पक्ष में कर लिया। फलतः मानिकचंद ने बिना प्रतिरोध के कलकत्ता अँग्रेजों को सौंप दिया। उनलोगों ने बाद में हुगली पर भी अधिकार कर लिया। ऐसी स्थिति में नवाब को बाध्य होकर अँग्रेजों से समझौता करना पड़ा 9 फरवरी, 1757 ई० को क्लाईव ने नवाब के साथ एक संधी की जिसके अनुसार मुगल सम्राट द्वारा अँग्रेजों को प्रदत्त सारी सुविधायें वापस मिलनी थी। 'दस्तक' वाला सारा माल बिहार, बंगाल और उड़ीसा में बिना चुंगी दिये जा सकता था। नवाब ने कम्पनी की सारी जब्त सारे फैक्ट्रियों, सम्पत्ति एवं आदमियों को लौटाने का वचन दिया। कम्पनी को नवाब की तरफ से हर्जाने की रकम भी मिलनी थी। अँग्रेज अब कलकत्ता की किलेबंदी कर सकते थे तथा अपना सिक्का चला सकते थे

किन्तु अँग्रेज इस संधि के पश्चात् भी चुप नहीं बैठे वे सिराजुद्दौला को गद्दी से हटाकर उसकी जगह पर एक ऐसा नवाब लाना चाहते थे जो उनके हित को साध सके। फलतः क्लाईव ने मीरजाफर से एक गुप्त संधि कर उसे नवाब बनाने का लोभ दिया। इसके बदले उसने अँग्रेजों को कासिम बाजार, ढाका तथा कलकत्ता की किलेबंदी करने, 1 करोड़ रुपये कम्पनी को देने तथा उसकी सहायता के लिये भेजी गई सेना का व्यय सहन करने का आश्वासन दिया। इस षड्यंत्र में जगत सेठ, राय दुर्लभ तथा अमीनचंद भी सम्मिलित किये गये। इसके पश्चात् क्लाईव ने नवाब पर अलीनगर की संधि को भंग करने का आरोप लगाया। इस समय नवाब की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। दरबारी षड्यंत्र तथा अहमद शाह अब्दाली के आक्रमण के उत्पन्न खतरे ने उसे घबड़ा दिया। नवाब की कमजोरी को भाँपकर क्लाईव ने सेना के साथ प्रस्थान किया। 23 जून 1757 ई० को प्लासी के मैदान में दोनों की सेनाओं की मुठभेड़ हुई। यह युद्ध एक नाममात्र का युद्ध था। नवाब

की सेना के एक बड़े हिस्से ने युद्ध में हिस्सा नहीं लिया। उनके थोड़े से सैनिकों ने ही मीरमदान और मोहनलाल के नेतृत्व में लोहा लिया। अंततः कमजोरी के बावजूद सिराजुद्दौला ने बहुत ही बहादुरी एवं हिम्मत से क्लाईव का मुकाबला किया, परन्तु मीरजाफर के विश्वासघात के कारण उसे अंततः हारना पड़ा। वह जान बचाकर भागा, परन्तु मीरजाफर के पुत्र मीरन ने उसे पकड़कर मरवा दिया।

प्लासी के युद्ध समाप्ति के बाद का परिणाम अत्यन्त ही व्यापक और स्थायी निकला। इसका प्रभाव कम्पनी, बंगाल और भारतीय इतिहास पर पड़ा। मीरजाफर को क्लाईव ने बंगाल का नवाब घोषित कर दिया। उसने कम्पनी एवं क्लाईव को बेशुमार धन दिया और संधि के अनुसार अंग्रेजों को अतिरिक्त सुविधायें भी मिली। बंगाल की गद्दी पर अब एक अंग्रेजों के हाथों की कठपुतली नवाब था। बंगाल की राजनीति पर अंग्रेजों का नियंत्रण कायम हो गया। वे अब सशक्त व्यापारी से राजशक्ति के केन्द्र बन गये। स्ड्मिरल वाट्सन ने ठीक ही इस युद्ध को केवल कम्पनी के लिये ही नहीं, बल्कि सामान्यतः ब्रिटिश राष्ट्र के लिये असाधारण महत्व का युद्ध कहा। यद्यपि सामरिक दृष्टिकोण से इस युद्ध का विशेष महत्व नहीं है क्योंकि यह युद्ध धोखे और छल-प्रपंच से जीता गया था। परन्तु इसके अन्य गम्भीर परिणाम निकले। इसका नैतिक परिणाम भारतीयों पर बहुत ~~बुरा~~ बुरा पड़ा। बंगाल की राजनीतिक दुर्बलता अब स्पष्ट हो गई। आर्थिक दृष्टिकोण से भी अंग्रेजों ने बंगाल का शोषण आरम्भ कर दिया। सबसे बड़ी महत्वपूर्ण बात यह हुई कि प्लासी के युद्ध ने बंगाल में अँग्रेजी सत्ता की स्थापना की प्रक्रिया आरम्भ कर दी। इसी युद्ध से प्रेरणा लेकर क्लाईव ने आगे बंगाल में अँग्रेजी सत्ता स्थापित कर ली। प्लासी के युद्ध में अँग्रेजों की विजय ने आँग्ल-फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता में भी सहायता की। बंगाल से प्राप्त धन के आधार पर अँग्रेज दक्षिण में फ्रांसीसियों पर निर्णायक विजय प्राप्त कर सके। श्री नवीनचंद्र सेन के अनुसार "प्लासी की लड़ाई के बाद भारत में अनन्त अंधकारमयी रात्रि आरम्भ हो गई। ताराचंद के अनुसार, प्लासी के युद्ध ने परिवर्तनों की लम्बी प्रक्रिया आरम्भ की, जिसने भारत के स्वरूप को बदल दिया। सदियों से प्रचलित आर्थिक और शासकीय व्यवस्था में परिवर्तन दिखाई देने लगे।